नं. २३६ त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	५ व्दी. अ. त्री. अ. च. अ. अ. अ. सं.	६ अ. ५ अ.	७ ७ ६ ५ ४ २	४ क्षीण सं.	४	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ वि भं. मन: विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भा. अ.	५ मि. सा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. युग. उ.

२३६तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जतीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोगा चत्तारि वा, तिण्णि वेदा,

----

है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ --- त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है, परन्तु उस समय पर्याप्त नामकर्मका उदय और वर्तमान शरीरके पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है। इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसी प्रकार अनाहारक कहा है। वहांपर भी अनाहारक कहनेका यही कारण जान लेना चाहिए। इसी प्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान,व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, व्दीन्द्रिय जातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि

अवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा।

नं. २३७ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१० व्दी. २ त्री. २ चतु. २ असं. २ सं. २	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१०, ७ ९, ७ ८, ६ ७, ५ ६, ४	४	४	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	१३ आ. व्दी. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भा. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

२३७तसकाइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि

और मन:पर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक छेदोस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक ; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिाक, असंज्ञिक तथा अनुभय स्थान भी है, आहारक, अनाहारक;

साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसें युगपत्
उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ --- यहाँपर विकल्पसे तीन अथवा चार योग बतलाये हैं इसका कारण यह है कि शरीर ग्रहणके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तपर्यत औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्र ये दो योग होते हैं और विग्रहगतिमें कार्मणकाययोग होता है, इसलिये ये तीनों योग अपर्याप्त अवस्थामें बन जाते हैं। परन्तु आहारकमिश्रकाययोग आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्त अवस्थामें होता तो अवश्य है। फिर भी औदारिकशरीरकी अपेक्षा वहां पर्याप्तता भी है, इसलिये जब छठे गुणस्थानमें आहारकशरीर सम्बन्धी अपर्याप्तताकी अविवक्षा कर दी जाती है तब तीन योग कहे जाते हैं, और जब उसकी विवक्षा कर ली जाती है तब अपर्याप्त अवस्थामें चार योग भी कहे जाते हैं।

त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पर्याप्त अपर्याप्तकेभेदसे दश जीवसमास; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छह पर्याप्तियां और

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्ण अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

नं. २३८ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	५ व्दी.	६ ५	१० ९	४	४	४ व्दी.	१ त्र स	१० म.	३	४	३ अ ज्ञ	१ अ सं	२ च.	द्र. ६ भा	२ भ.	१ मि.	२ सं.	१ अ ाह	२ स ाक

	प. त्री. प. च. प. अस- ं. प. सं. प.		८ ७ ६			त्री. च. पं.	.	४ व. ४ अ ौ. १ वै. १			ाा .	.	६ J . अ च ा.	. ६	अ .		अ सं .	ा.	ा. अ ना .

२३८ तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, पंच पज्जतीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

छह अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी-पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी-पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, व्दीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक ;

मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक;

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर व्दीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे दश प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं,

पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जतीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२३९।

नं. २३९ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं	ग	इं.	क	यो	व	क	ज्ञ	सं	द.	ले	भ	स	सं	अ	उ

	.	.	.	.	ा.		ा .	.	`.	.	ाा .	य.		.	ा.	.	झि ा	ा.	.
१ मि .	५ व्दी . अ. त्री. अ. चत ु. अ. अस ां. अ. सं. अ.	६ अ . ५ अ .	७ ७ ६ ५ ४	४	४	४ व्दी . त्री. चत ु. पंचे .	१ त्र स .	३ अ ौ. मि . वै. मि . क ार्म .	३	४	२ कु म. कु श्रु .	१ अ सं .	२ च क्षु . अ च .	द्र. २ क ा. शु . भा . ६	२ भ ा. अ .	१ मि .	२ सं . अ सं .	२ अ ाह ा. अ ना .	२ स ाक ा र अ ना क ार

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर व्दीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, और चार प्राण; चारों संज्ञाएं चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको

आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्ती, अदीदपाणो, खीणसण्णा, चदुगदिमदीदो, अणिंदिओ, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिध्दिया णेव अभवसिध्दिया, खइगसम्मत्तं, णेव सण्णिणो, णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता होंति२४०।

नं. २४० अकायिक जीवों के आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
अतीतगु.	अतीतजी.	अतीतप.	अतीतप्रा.	क्षीणसं.	अतीतग.	अतीन्द्रिय.	अकाय.	अयोग.	अपगा.	अकषा.	१ के.	अतीतसं.	१ केद.	अलेश्या	अतीत. भ. अ.	क्षा.	अतीत. संज्ञि. असं	१ अना.	२ साका. अना. यु

																	.		. उ .

एवं तसकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो।

तसकाइय-लध्दि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाणा,

---

त्रसकायिक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे लेकर अयोगिकेवलिजिन तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

अकायिक जीवोंके आलाप कहनेपर--- अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत प्राण, क्षीणसंज्ञा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम-असंयम और संयमासंयम इन तीनों विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिध्दिक और अभव्यसिध्दिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसी प्रकार त्रसकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवलि गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिये।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रियसम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंकेपांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रिसे लेकर व्दीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-

सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४१।

नं. २४१ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	५ व्दी. अ. त्री. अ. चतु. अ. असं. अ. सं. अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७ ६ ५ ४	४	२ ति. म.	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	२ औ. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

एवं कायमग्गणा समत्ता।

जोगाणुवादेण अणुवादो मुलोघ-भंगो। णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगिगुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिदूण मूलेाघालावो वत्तव्वो।

मणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा। केइं वचि-कायपाणे अवणेंति, तण्ण घडदे; तेसिं सत्ति

चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिकेदो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी हैं।

इस प्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई।

योगमार्गणाके अनुवादसे आलापोंका कथन मूल ओघ आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहांपर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोगिगुणस्थान और अतीत गुणस्थान नहीं होता है सो आगमाविरोधसे जानकर मूल ओघालाप कहना चाहिए।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण होते हैं। कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश प्राणोंमेंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका वैसा करना घटित नहीं होता है, क्योंकि मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है,

---

सब्भावादो। वचि-कायबलणिमित्त-पुग्गल-खंधस्स अत्थित्तं पेक्खिदूण पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचिपज्जत्तीओ अत्थि। चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा२४२।

नं. २४२ मनोयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	ज	प	प्रा	सं	ग	इं	क	यो.	व	क	ज्ञ	सं	द	ले	भ	स	सं	अ	उ

	ी.	.	.	.	ा.	.	ा.		`.	.	ाा.	य.	.	.	ा.	.	ङिा	ा.	.
१३ अयो. विना.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीणंस.	४	१ पंचो.	१ त्रस.	४ मनो.	३ अपगा.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भा. अ.	६	१ सं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि,

----

इसलिये ये दो प्राण उनके बन जाते हैं। उसी प्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं। इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तियां भी उनके बन जाती हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक

इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम आदिके दो

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४३।

नं. २४३ मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	गा.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भा. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४४।

नं. २४४ मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सास्वा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयेागी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

---

जीवसमासो छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४५।

नं. २४५ मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ ज्ञा न. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्या.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. २४६ मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.

											.						ा		
१ अवि.	१ सं. प.	६	१ ०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस ा.	४ मनो.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

२४६ मणजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, तिण्णि

एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक; औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिध्दिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४७।

नं. २४७ मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ देशा.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रसा.	४ मनो.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मणजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिध्दिया,

---

मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुध्दि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२४८।

नं. २४८ मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	अ.	उ.
१ प्रम.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	४ मति. श्रुत	३ साम. छेदो	३ के द. वि	द्र. ६ भा. ३	१ भ.	३ अ ौप.	१ सं.	१ आह.	२ साक.

											।. अव . मन :	. प रि.	ना .	शु भ.		क्षा . क्षा यो .			अ ना .

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो चेव मणजोगा वत्तव्वा। सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोगो, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि, सत्त

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही है, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलि सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगियोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा २४९।

नं. २४९ मृषा मनोयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ सयो. अयो. विना.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१ मृषा.	३ अयोग.	४ अकषा.	७ केज्ञा. विना.	७	३ केद. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ१ (मु. खीणसण्णाओ) त्ति ताव मणजोगिभंगो। णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं।

वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, मण-सरीर-पज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर-मणबलपाणा उच्चंत्ति। ताओ वि उप्पण्णसमयादो जाव जीविदचरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्संत्ति। जेण मण-वचि-कायजोगा

चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मृषामनोयागी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक मृषामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकार सत्यमृषामनोयोगियोंके भी आलाप कहना चाहिए।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर--- आदिके तेरह गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर व्दीन्द्रिय जीवोंतक क्रमश: दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण होते हैं। मन:पर्याप्ति और शरीरपर्याप्तिसे उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं। वे शक्तियां भी उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं। और जिस कारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं ग्रहण किये गये हैं, इसलिये वचनयोगियोंके वचनयोगसें निरुध्द अर्थात् युक्त अवस्थाके होनेपर भी दशों प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा

पाणेसु ण गहिदा तेण वचिजोगे णिरुध्दे वि दस पाणा हवंति। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो

असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा२५०।

नं. २५० वचनयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ अयो. विना.	५ व्दी. प. त्री. प. चतु. प. असं. प. सं. प.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४ क्षणिस्सं.	४	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	४ वच.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि-गदीओ, वेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो

क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, व्दीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

दंसणाणि, दव्व-भावेह छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२५१ ।

नं. २५१ वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	५ व्दी. प. त्री. प.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्र स.	४ वच.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार.	२ साकार अ

	च.प.असं.प.सं.प.												अचा.						नाकार

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ तं अवणेदूण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो । मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए। सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यमृषावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं। सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि आलाप कहते सयम जहां पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहां उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए। मृषावचनयोगके आलाप भी मृषामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि मृषामनोयोगके स्थानपर मृषावचनयोग कहना चाहिए। इसी प्रकारसे सत्यमृषावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिए, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यमृषामनोयोगके आलापोंके समान

जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोग सामान्यके आलापोंके समान जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोग सामान्यके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि असत्यमृषावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यमृषावचनयोग ही कहना चाहिए।

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, सत्तकायजोगा, तिण्णिवेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा२५२ ।